THE HERALD of Christian Science
informal translations from the publications of the Christian Science Publishing Society

हमारे रोज़गार का स्त्रोत
The source of our employment

Author – David C. Kennedy

Christian Science Sentinel Vol 116, Issue 48, December 1, 2014

हम सबके लिए **परमेश्वर** के अद्भुत आशीषों में से एक है **परमेश्वर** के रूप में हमारी पूर्णता – एक पूर्णता जिस में शामिल है कभी न समाप्त होने वाली सही गतिविधि या रोज़गार।

उत्पत्ति के प्रथम अध्याय में – यह घोषणा करने के बाद कि **परमेश्वर** ने मानव को अपने रूप तथा प्रतिरूप में बनाया और उन्हें नर और नारी बनाया – बाइबल कहती है, "और परमेश्वर ने उन्हें आशीषित किया और परमेश्वर ने उनसे कहा, फलो फूलो और वृद्धि करो" (पद्य 28)।

क्योंकि हमारा वास्तविक व्यक्तित्व **परमेश्वर** की आध्यात्मिक अभिव्यक्ति है, हमारे लिए वृद्धि करने का अर्थ है सदा विकसित होना, प्रकाशित होना और विस्तृत होना। **परमेश्वर** सदा स्वयं को अभिव्यक्त करता है और **परमेश्वर** अनन्त है। इसलिए हमारे व्यक्तित्व और इसकी शाश्वत, **परमेश्वर** – रचित गतिविधि का कोई अंत या सीमा नहीं है। मेरी बेकर ऐडी, जिन्होंने क्रिश्चियन साँयस को खोजा और रचा, इसके बारे में लिखती हैं, "**परमेश्वर** मानव में अनन्त विचार को अभिव्यक्त करता है जो स्वयं को एक असीम आधार से सदा विकसित करता है, विस्तृत करता है, ऊँचा और ऊँचा उठाता जाता है" (साँयस एण्ड हैल्थ विद् की टू द स्क्रिपचर्स, पृष्ठ. 258)।

निरन्तर प्रकाशन और विकास की यह वास्तविकता सही रोज़गार के लिए हमारी इन्सानी ज़रूरत पर सीधे तौर पर लागू होती है क्योंकि जो आध्यात्मिक तौर पर सत्य है, के पास अवश्य ही इन्सानी प्रमाण होगा और होना ही चाहिए, जब हमारी ईमानदार प्रार्थना और आध्यात्मिक प्रगति के द्वारा हमें सत्य स्पष्ट होता जाएगा। यदि **परमेश्वर** हमें "अनन्त विचार को सदा स्वयं को विकसित करते हुए" प्रकट कर रहा है तब हमारी सही गतिविधि में कोई गतिरोध, अवरोध, या गिरावट नहीं होते। बेरोज़गारी की कोई निराशा, निम्न – रोज़गार की कोई हताशा नहीं होती – हमारी निरन्तर, पूर्ण उपयोगिता में कोई बाधा नहीं होती क्योंकि **परमेश्वर** इसका स्त्रोत है।

यदि हम बिना सफलता के रोज़गार ढूंढ रहे हैं, जो मत हमें निराश करने की कोशिश कर सकता है वह यह है कि हम सही रोज़गार के साथ भौतिक तरीके से जुड़े हुए हैं। ऐसा लगता है कि हमारी नौकरी की सम्भावनाएँ उससे जुड़ी हैं कि कौन नियुक्त कर रहा है, और जो नियुक्त कर रहा है अर्थव्यवस्था के साथ जुड़ा हुआ है और अर्थव्यवस्था किसी एक या दूसरे तरीके के चक्रीय परिवर्तन से जुड़ी है। और भय, बेशक है, कि हमारा किराया या कर्ज़ अदा करने का सामर्थ्य इस सबके साथ बंधा हुआ है।

For this translation in English and other translations in [Hindi], please see http://translations.christianscience.com

Translation © 2015 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

क्रिश्चियन साँयस करुणा से इस तरह के भय को हम से दूर हटाती है और दिव्य **प्रेम*** के सदा उपस्थित प्रावधान के आश्वासन को प्रकट करती है, जो कभी भी परिस्थितियों पर निर्भर नहीं होता और जो बिल्कुल उन तरीकों से प्रकट होता है जैसा ज़रूरी है। हमारा सही रोज़गार और पूर्ति चीज़ों की भौतिक समझ में नहीं पाए जाते। **परमेश्वर** अनन्त **जीवन** में पाए जाते है, जो सदा उस सबका रहस्योद्घाटन कर रहा है, जो **जीवन** के पास हमारे लिए है, इसकी निरन्तर पूर्णता में; वे दिव्य **प्रेम** मे पाये जाते है, जो हमारे लिए सदा सही गतिविधि और अच्छाई की प्रचुरता को प्रकट कर रहा है। इसलिए हम कभी भी अपने सही रोजगार से दूर नहीं है या **प्रेम** की करुणामयी देखभाल और प्रावधान, से जो कभी नही रुकते।

हम कभी भी अपने सही रोजगार से दूर नहीं है या प्रेम की करुणामयी देखभाल और प्रावधान से, जो कभी नही रुकते।

इन दिनों की एक बढ़ती हुई चिंता है कि डिजिटल क्रांति, मानवता के लिए अपनी महत्वपूर्ण प्रगति के साथ, पूरे संसार मे बदलाव ला रही है। जो पीछे छोड़ देगी कई श्रमिकों को, जो फंसे होंगे स्थायी वेतनो के साथ या बिना किसी नौकरी के।

हम निश्चित ही इस चुनौती में मानव जाति को प्रार्थना की बाहों मे समेट सकते हैं। क्या दिव्य **मन** के विचारों को कभी भी पीछे छोड़ा जा सकता है या वह अपूर्ण हो सकते है? क्या **परमेश्वर** के बच्चों की संभावनाएँ, **माता–पिता परमेश्वर** के बजाए किसी और चीज से बंधी हैं, जिससे कि वे कभी अलग नहीं हो सकते? **मन** के सभी विचार, **परमेश्वर** के बच्चे **मन** के साथ एक हैं। वे **मन** में रहते हैं और सारी अच्छाई जो **मन** सदा रहस्योद्घाटित करता है, उसके एक–एक विचार में प्रकट होती है। इसलिए क्योंकि जो हम वास्तव में है, हम सबको **मन** के प्रकटीकरण के साथ लाया गया है और किसी को पीछे नही छोड़ा गया है, क्योंकि हममें से हर कोई हमारे अपने अस्तित्व की परिपूर्णता के उस रहस्योद्घाटन को प्रकट करता है। **परमेश्वर** की प्रगति का कानून सबको शामिल करता है।

सूर्य की रोशनी की एक किरण अपनी पूरी तरह चमकने की योग्यता या पूरी तरह चमकने के अवसर से कभी भी वंचित नहीं होती। चमकना तो इसका स्वभाव है क्योंकि यह सूर्य से आती है। ठीक इसी तरह से **परमेश्वर** को अभिव्यक्त करना वैसा है जैसे हम स्वाभाविक तौर पर करते हैं, **परमेश्वर** का रूप होने के नाते कर सकते हैं और उसे कोई नहीं रोक सकता। **परमेश्वर** को अभिव्यक्त करने में कोई शीशे की दीवार नहीं होती, कोई आकड़ों की कमी नही होती या हमारे निरंतर विकास को बाधित करने में कोई आर्थिक मंदी नहीं होती। यह इस बारे में नही है कि हम किसे जानते हैं, या कौन हमे जानता है या हम कहाँ रहते हैं, या हमने अतीत में क्या काम किया है? हमारी **परमेश्वर** द्वारा प्रदान की गई क्षमताएं सदा माँग मे होती है क्योंकि **परमेश्वर** सदा से माँग करता है कि उसे पूरी तरह से प्रकट किया जाए। **परमेश्वर** को कभी भी कम अभिव्यक्त नहीं किया जा सकता, इसलिए **परमेश्वर** को अभिव्यक्त करने के हमारे रोज़गार में कभी कमी नहीं आ सकती।

---

* जो शब्द बड़े अक्षरों में लिखे गये हैं वह परमेश्वर के समानार्थक शब्द हैं।

Translation © 2015 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

यदि और जब हमारे लिए सेवा निवृति सही होगी, परमेश्वर के कभी न समाप्त होने वाले प्रकटीकरण का सत्य हमारे लिए समृद्धि, उपयोगिता और संतुष्टि का एक निरंतर कानून बना रहेगा। साँयस एण्ड हैल्थ यह पुर्नाश्वासित करने वाला वादा करती है, ''अनुभव का हर स्तर दिव्य अच्छाई और प्रेम के नए विचारों को प्रकट करता है'' (पृष्ठ 66)

मानवता के हमारी प्रार्थनाएँ संसार के लिए उपचारक प्रभाव बन सकती हैं क्योंकि वे क्राइस्ट और पवित्र आत्मा की तरफ सोच का द्वार खोलती है। क्राइस्ट सत्य है, जो मानव की परमेश्वर द्वारा स्थापित की गई पूर्णता की रोशनी में कम उपयोगी, उपेक्षित मानव के बोझिल भ्रम को दूर करता है। पवित्र आत्मा दिव्य साँयस है, परमेश्वर का कानून और हर एक के सच्चे अस्तित्व की साँयस। पवित्र आत्मा हर इंसानी चेतना और अनुभव में प्रचालित होती है, सही रोज़गार के प्रमाण के प्रत्यक्ष तरीकों को खोलती हुई जो परमेश्वर के पास हर एक के लिए हैं। हम उन तरीकों को रेखांकित नहीं कर सकते जिनमें उपचार संपूर्ण संसार में दिखाई देगा और अनुभव किया जाएगा, परंतु हम सर्वज्ञ प्रेम पर विश्वास कर सकते हैं हमारी जरूरतों को सही तरीके से पूरा करने में।

और हमारे लिए भी क्रिश्चियन साँयस साँत्वनादायक उम्मीद प्रस्तुत करती है कि रोज़गार के लिए हमारा नज़रिया माता–पिता परमेश्वर के साथ जुड़ा होता है, मन के साथ जो हमें पहले से जानता है और पहले से उस गतिविधि को जानता है जो हमारे लिए सही है। मन का एक भी विचार मन से अनजान नहीं है या मन के ''रडार'' से बाहर नहीं है। दिव्य प्रेम हम सब को जानता है और निरंतर इसके उद्देश्यों को पूरा कर रहा है।

Translation © 2015 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.